# श्रीगुणरत्नगणि की तर्कतरङ्गिणी

[ जितेन्द्र जेटली ]

अनेकान्तवाद का आचरण करने वाले जैनाचार्यों ने अपने सम्प्रदाय के दार्शनिक ग्रन्थों पर टीका-टिप्पण आदि की रचना की है यह आश्चर्य की बात नहीं है किन्तु अन्य दर्शन के ग्रन्थों पर भी प्रामाणिक व्याख्या रूप टीकायें लिखी हैं।[1] ऐसी रचनाओं में से श्रीगुणरत्नगणिजी की तर्कतरङ्गिणी भी है।

श्रीगुणरत्नगणि विनयसमुद्रगणि के शिष्य थे। विनयसमुद्रगणि जिनमाणिक्य के शिष्य थे जो कि जिनचन्द्रसूरि के समानकालीन थे। जिनचन्द्रसूरि श्रीहीरविजयसूरि के समानकालीन थे। उनका समय मोगल सम्राट अकबर के समय का है क्योंकि वे उनके दरबार में आमन्त्रित हुआ करते थे। श्री गुणरत्नगणि ने तर्कतरङ्गिणी के उपरान्त 'काव्यप्रकाश' के ऊपर एक १०००० श्लोकप्रमाण की सुन्दर टीका लिखी है। यह टीका उन्होंने अपने शिष्य रत्नविशाल के लिए लिखी है। इसी तरह यह तर्कतरङ्गिणी भी उन्होने उसी शिष्य के वास्ते लिखी है। तर्कतरङ्गिणी पुस्तिका में यह स्पष्ट निदेश है। वे लिखते है कि—

श्रीमद्रत्नविशालाख्यस्वशिष्याध्ययनहेतवे।
गुणरत्नगणिश्चक्रे टीकां तर्कतरङ्गिणीम्॥

यह तर्कतरङ्गिणी गोवर्धन की प्रकाशिका जो कि केशव मिश्र की तर्कभाषा के ऊपर टीका है उसकी प्रतीक है। तरङ्गिणी की समाप्ति में और मङ्गल में इस विषय का निर्देश किया गया है।

इस तर्कतरङ्गिणी के अभ्यास से यह स्पष्ट प्रतीत होती है कि श्री गुणरत्नगणिजी अनेक शास्त्रों के विद्वान होते हुए एक अच्छे तार्किक थे। वे खरतरगच्छ के थे इसलिए उस गच्छ के लिए यह अत्यन्त गौरव की बात है। वे किस प्रकार के उच्च श्रेणी के तार्किक थे यह तर्कतरङ्गिणी से ही ज्ञात होता है।

तर्कतरङ्गिणी गोवर्धन की प्रकाशिका की टीका होने से सामान्यतः चर्चा में गोवर्धन का वे अनुसरण करते हैं फिर भी वे जिन सिद्धान्तों की चर्चा गोवर्धनजी ने नहीं की है उन सिद्धान्तों की चर्चा भी समय २ पर करते हैं। जैसे कि गोवर्धन मङ्गलवादकी कोई विशेष चर्चा नहीं करते हैं फिर भी गुणरत्नगणि अपनी तर्कतरङ्गिणी में अन्य नैयायिक विद्वानों की भांति मङ्गलवादकी चर्चा विस्तार से करते हैं। इस चर्चा में वे उदयनाचार्य, गङ्गेश, पक्षधर मिश्र आदि रूढ प्राचीन तथा अर्वाचीन विद्वानों को वे मङ्गल विषयक मतों की आलोचना करके वे गङ्गेश उपाध्याय के मत से सम्मत होते हैं।[3]

मङ्गलवाद के अनन्तर वे न्यायसूत्र के प्रमाण प्रमेय आदि प्रथम सूत्र को लेकर समासवाद की चर्चा करते हैं। यद्यपि गोवर्धन ने यह चर्चा मोक्षवाद के अनन्तर की है। परन्तु गुणरत्नगणि ने यह चर्चा यहीं पर की है और उचित स्थान भी यही है क्योंकि समासवाद की चर्चा से ही न्यायसूत्र के प्रमाण को लेकर अपवर्ग का अर्थ स्पष्टतर होता

---

१ द्रष्टव्य 'जैनेतर ग्रन्थों पर जैन विद्वानों की टीकाएँ' भारतीय विद्या वर्ष २ अङ्क ३ ले० अगरचन्द नाहटा तथा सप्तपदार्थी जिनवर्धनसूरि टीका सहित प्रस्तावना पृ० ७ से ९। प्र० ला० द० भारतीय विद्यामन्दिर अहमदाबाद

२ द्रष्टव्य युगप्रधान श्रीजिनचन्द्रसूरि पृ० १६३-१६४ श्री अगरचन्द नाहटा, भँवरलाल नाहटा।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है इस वास्ते यह चर्चा यहां की जाय यह अधिक तर्कसंगत प्रतीत होता है।

समासवाद में गोवर्धन ने न्यायसूत्र के प्रथमसूत्र में इतरेतर द्वन्द समास कहकर सूत्र को समझाया है। गुणरत्नगणि ने भिन्न-भिन्न द्वन्द्व समासों की चर्चा पाणिनि के सूत्र के आधार पर की है।[४] वे कर्मधाराय और द्वन्द्व के भेद को समझकर सूत्र में इतरेतर द्वन्द्व समास क्यों है इस विषय को स्पष्ट करते हैं। इस चर्चा से गुणरत्नगणि अच्छे वैयाकरण थे यह भी प्रतीत होता है।

समासवाद के अनन्तर प्रकाशिकाकार मोक्षवाद की चर्चा विस्तार से करते हैं। न्याय के सोलह पदार्थों का तत्वज्ञान मोक्ष का कारण किस तरह होता है यह समझाने का प्रयत्न करते हैं। वे शास्त्र तथा तत्वज्ञान को मोक्ष का सीधा कारण न मानकर शास्त्र तथा तत्वज्ञान मोक्ष के प्रयोजक हैं ऐसा सिद्ध करते हैं।[५] गुणरत्न प्रकाशिका के प्रामाणिक टीकाकार होनेसे गोवर्धन की इस बात का समर्थन करते हुए इसे विस्तार से समझाते हैं और किस तरह शास्त्र और तत्वज्ञान मोक्ष का सीधा जनक न होकर प्रयोजक हैं इसे स्पष्ट करते हैं।[५] इस चर्चा में गुणरत्नगणि काशीमरण से मुक्ति होती है या नहीं इसकी भी चर्चा करते हैं और नैयायिक मतानुसार काशीमरण से तत्वज्ञान होता है और तत्वज्ञान मोक्षका प्रयोजक है इस बात को वे सिद्ध करते हैं। यहां काशी मरण जैसा सरल मार्ग को छोड़कर शास्त्राभ्यास जैसा कठिन मार्ग क्यों लिया जाय? जैसे पूर्वपक्ष का खण्डन गुणरत्न प्रामाणिक टीकासार के नाते करते हैं।[६] वे चाहते तो इस विषय का अच्छी तरह खण्डन कर सकते थे पर प्रामाणिक टीकासार होनसे ही उन्होंने ऐसा यहां नहीं किया है।

न्यायसूत्र के वात्यस्यापन भाष्य में शास्त्र की विविध प्रवृत्ति, उद्देश, लक्षण तथा परीक्षा निर्दिष्ट है। तर्कभाषाकार इन तीनों का लक्षण देते हैं। प्रकाशिका के कर्त्ता गोवर्धन इन तीनों विषय की विस्तृत चर्चा करते हैं। उन्हीं का अनुसरण करते हुए गुणरत्न इन विषयों की ओर विस्तृत चर्चा करते हैं।[७] उनकी इस चर्चा में उनका नव्यन्याय का पाण्डित्य स्पष्ट प्रतीत होता है।

उद्देश, लक्षण और परीक्षा इन तीनों की चर्चा के पीछे प्रमाण वगैरह सोलह पदार्थों का विचार शुरू होता है। प्रमाण का क्रम प्रथम होने से स्वाभाविक रूप से प्रमाण का लक्षण और परीक्षा की जाती है। गुणरत्न प्रमाण के लक्षण में प्रमा की यथार्थता क्या है इसकी चर्चा गोवर्धन का अनुसरण करते हुए विस्तार से करते हैं। यथार्थत्व को समझाते हुए तद्वति तत्प्रकारात्व में गुणरत्न 'तद्वति' पद के अर्थ में जितने भी विरोधि अर्थ हैं उनका युक्ति से खण्डन करते हैं।[८] प्रमा का करण प्रमाण है ऐसा लक्षण करने में जैसे प्रमा के लक्षण की चर्चा करनी होती है उसी तरह करण की भी चर्चा स्वाभाविक रूपसे करनी पड़ती है। गोवर्धन प्रमा करण प्रमाण को समझाते हुए 'अनुभवत्वव्याप्याजात्यवच्छिन्नकार्यतानिरूपितकारणताश्रयत्वे सति प्रमाकरणत्वम् प्रमात्वं' ऐसी प्रमाण की व्याख्या देते हैं। गुणरत्न नव्यन्याय की पद्धति से विस्तार से प्रमाण के इस लक्षण का पकृत्य करके समझाते हैं।[९] कारण के लक्षण को समझाते हुए उन्होंने पांचों अन्यथासिद्धि को भी विस्तार से स्पष्ट किया है।[१०] तदनन्तर तीनों प्रकार के करण तथा समवायि कारण और

---

३ द्रष्टव्य मङ्गलवाद तर्कतरङ्गिणी पृ० १ से ८ सं० डॉ० वसन्त पारीख

४ द्रष्टव्य वही पृ० १०

५ द्रष्टव्य तर्कतरङ्गिणी मोक्षवाद पृ० २३-२८

६ ,, वही पृ० ३०

७ ,, वही पृ० ३७-५१

८ द्रष्टव्य वही पृ० ५८

९ ,, ,, पृ०—६७-७१ तथा पृष्ठ ७८-८४

१० ,, ,, पृ० ८४-९०

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

उपादान कारण में क्या भेद है इसकी चर्चा भी की है[११]।

प्रमाण के लक्षण में प्रत्यक्ष प्रमाण की चर्चा में तर्क भाषाकार और प्रकाशिकाकार का अनुसरण करते हुए उन्होंने बौद्ध और मीमांसक के प्रत्यक्ष लक्षणों की भी विस्तार से चर्चा करके खण्डन किया है[१२]।

प्रत्यक्ष के अनन्तर अनुमान प्रमाण की चर्चा में 'अनुमान का कारण लिंग परामर्श ही है' इस तर्कभाषाकार और प्रकाशिकाकार के मत की गुणरत्न ने विशदता से नव्यन्याय के आधार पर समझाया है[१३]। इस चर्चा में व्याप्ति के लक्षण की चर्चा गोवर्धन ने अधिक नहीं की है परन्तु गुणरत्न नव्यन्याय के प्रस्थापक गंगेश उपाध्याय के व्याप्ति के लक्षण को लेकर व्याप्ति के अनेक लक्षण प्रस्तुत करते हैं और इससे उनके नव्यन्याय के ज्ञान की विशिष्टता स्पष्टतया गोचर होती है[१४]। इस चर्चा में वे उपाधि, तर्क वगैरह की चर्चा करते हुए मीमांसक जैसे अन्य दार्शनिकों के मतों की भी व्याप्तिग्राह्यत्व के विषय में चर्चा करते हैं। चार्वाक जोकि प्रत्यक्ष प्रमाण का स्वीकार ही नहीं करते हैं उनके मत का भी गुणरत्न ने नैयायिक पद्धति से खण्डन किया है[१५]।

अनुमान में व्याप्ति की चर्चा के साथ हेतु की चर्चा भी अनिवार्य है। नैयायिक अन्वयव्यतिरेकी केवलान्वयी और केवलव्यतिरेकी तीनों प्रकार के हेतुओं का स्वीकार करते हैं। इस चर्चा में गुणरत्न उदयन के मत का अनुसरण करते हुए केवलव्यतिरेक व्याप्ति अन्वय रूप से भी कैसे हो सकती है उसे स्पष्ट करते हैं[१६]। पक्षता की चर्चा में 'अनुमित्साविरह विशिष्ट सिद्ध्यभावः पक्षता' के लक्षण में विशिष्टाभाव के अर्थ की चर्चा वे विशदतासे और विस्तार से करते हैं[१७]।

अनुमान की चर्चा में हेत्वाभास की चर्चा अनिवार्य है। गुणरत्न हेत्वाभास का गोवर्द्धन से प्रस्तुत लक्षण किस तरह पांचों हेत्वाभासों को आवृत करता है यह एक प्रामाणिक टीकाकार के नाते विस्तार दिखाते हैं। वे प्रत्येक हेत्वाभास में क्या फर्क है, विशेषतः असिद्ध और विरुद्ध में क्या अन्तर है इसका सूक्ष्म निरूपण उदयन के मत का अनुसरण करते हुए देते हैं। साथ में एक ही स्थान पर हेत्वाभासों का संग्रह हो जाय, अर्थात् अनेक हेत्वाभास हों तो उसमें कोई दोष नहीं है, इस बात को भी स्पष्ट रूप से प्रतिपादित करते हैं[१८]।

अनुमान के अनन्तर उपमान की चर्चा टीकाकार गोवर्धन के अनुसार अत्यन्त संक्षेप में करके वे शब्दप्रमाण की चर्चा करते हैं। गोवर्द्धन शब्द प्रमाण की चर्चा को अधिक विस्तार से "एतावत्प्रपंचस्य बालबोधार्थं करणात्' ऐसा कह कर नहीं करते हैं, परन्तु गुणरत्न शब्द प्रमाण की अनेक विशेषताओं की चर्चा विस्तार से करते हैं (पृ० ३०७)। वे गङ्गेश के मत को उद्धृत करके गोवर्धन के दिये हुए लक्षण को विस्तार से समझाते हैं, और आसत्व क्या है, तथा आकांक्षा, योग्यता आदि भी क्या

११ तर्कतरङ्गिणी पृ० १०० और आगे
१२ ,, ,, पृ० १७४
१३ द्रष्टव्य वही पृ० १८३-१८४
१४ ,, ,, पृ० १८७ और आगे
१५ ,, ,, पृ० २४२
१६ ,, ,, पृ० २७२
१७ ,, ,, पृ० २७५

१८ 'वायुर्गन्धवान् स्नेहात्' इस हेत्वाभास के उदाहरण में वे लिखते हैं कि एकस्यैव 'स्नेहस्य अनैकान्तिकविरुद्धेत्यादि पञ्चत्वव्यवहारः कथमित्याशङ्कायामुत्तरम् — उपाधेयसङ्करेऽप्युपाध्यसङ्कर इति न्यायाद्दोषगतसंख्यामादाय दुष्टहेतौ पञ्चत्वादिसंख्याव्यवहारः' — तर्कतरङ्गिणी सं० डॉ० परीख, हस्तलिखित प्रति पृ० ६०५-६०६।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

है, यह भी स्पष्ट करते हैं। तर्कभाषाकार और प्रकाशिकाकार ने शब्द के अनित्यत्व की चर्चा यद्यपि नहीं की है किन्तु इसका महत्त्व समझते हुए गुणरत्न इस चर्चा को छेड़ते हैं, और शब्द-नित्यत्व आदि मीमांसक के मत का खण्डन भी करते हैं। इस चर्चा में शब्द की शक्तियाँ, अभिधा, लक्षणा और व्यञ्जना की चर्चा भी समाविष्ट हो जाती है (पृ० ३१५)।

चारों प्रमाणों की स्थापना के अनन्तर अर्थापत्ति, अनुपलब्धि, किंवा अभाव ये दो प्रमाणों का अन्तर्भाव अनुमान में न्याय और वैशेषिक परम्परा करती है। तरङ्गिणीकार भी उनका अनुसरण करते हुए इन प्रमाणों का अनुमान में अन्तर्भाव करते हैं। प्रमाण के अन्तर्भाव की इस चर्चा में विशेषण विशेष्य भाव सम्बन्ध से अभाव का प्रत्यक्षज्ञान कैसे होता है यह भी विशदता से तरंगिणी में समझाया गया है (पृ० ३३५-३५७)।

प्रमाणों की चर्चा में तर्कभाषाकार ने प्रामाण्यवाद की चर्चा भी की है। इस विषय में तर्कभाषाकार पूर्व पक्ष में भट्टमत के सिद्धान्त को रखते हैं। प्रकाशिका का स्वतः प्रामाण्यवादी मीमांसक के तीनों मतों को लेकर उनका खण्डन करते हैं। गुणरत्न मीमांसक और नैयायिक दोनों के मतों को समझाकर प्रथम ज्ञानप्रामाण्य क्या है, यह विस्तार से समझाते हैं और मीमांसक के प्रत्येक मत को विशदता से और विस्तार से चर्चा करते हैं (पृ० ३६१-६२)। यद्यपि इस विषय में जैन सिद्धान्त न्याय वैशेषिक के सिद्धान्त से पृथक् है। फिर भी गुणरत्न इसे प्रामाणिकता से न्याय वैशेषिक के परतः प्रामाण्यवाद का स्थापन और मण्डन करते हैं। करीब आधा ग्रन्थ तरंगिणीकार ने प्रमाण की चर्चा में उपयुक्त किया है।

प्रमाण की चर्चा के अनन्तर न्याय दर्शन के बारह प्रमेयों की चर्चा शुरू होती है। इन बारह प्रमेयों में भी आध्यात्मिक दृष्टि से मुख्य आत्मा, शरीर, और इन्द्रिय की चर्चा होनी चाहिए परन्तु प्रमाण-विचार जितनी चर्चा इन प्रमेयों की नहीं की गई है। इस विषय में तर्कभाषाकार से लेकर तरङ्गिणीकार तक सब समान हैं। शरीर की चर्चा में गुणरत्न ने शरीरत्व जाति है या नहीं इसकी चर्चा छेड़ी है (पृ० ४३८-३९) और साङ्कर्य दोष होते हुए भी शरीरत्व जाति है ऐसा स्वीकार किया है।

चतुर्थ प्रमेय अर्थ की चर्चा में वैशेषिक मत के सातों पदार्थों का निरूपण तर्कभाषाकार ने किया है। इससे कुछ पदार्थों की चर्चा की पुनरुक्ति होती है। गुणरत्न इस वास्ते इस विषय की कोई विस्तृत चर्चा नहीं करते हैं। यहां 'एवम्' पद का विचार श्रीगुणरत्न विस्तार से करते हैं (पृ० ४४८)। चर्चा का समापन करते हुए 'एव' पद का अर्थ अन्योन्याभाव हो सकता है ऐसे लीलावतीकार के मत को वे समर्थित करते हैं।

अर्थ में से द्रव्य पदार्थ के निरूपण में पृथ्वी का निरूपण आता है। इसमें विशेष चर्चा पाकज प्रक्रिया की की गई है। यह चर्चा यहां संक्षेप में ही की जाती है, क्योंकि इस चर्चा का उचित स्थान गुणों की चर्चा में है। द्रव्यों की चर्चा में तेजस द्रव्य सुवर्ण की चर्चा भी स्वभावतः की जाती है। इस विषय में तरंगिणीकार सूचन करते हैं कि यद्यपि सुवर्ण में तैजस रूप तथा स्पर्श उत्पन्न होता है किन्तु वे पृथ्वी के परमाणु की अधिकता होने से पार्थिवरूप और पार्थिव स्पर्श से अभिभूत हो जाते हैं (पृ० ४८२-५४)।

पृथ्वी, जल, तेज और वायु के निरूपण के अनन्तर चारों द्रव्यों के परमाणुओं की चर्चा में परमाणुवाद की चर्चा की जाती है। जैनदर्शन के पुद्गल और न्याय-वैशेषिक के परमाणु भिन्न होने पर भी श्री गुणरत्न यहां केवल परमाणुवाद की चर्चा करते हैं। परमाणुओं से सृष्टि-संहार की प्रक्रिया कैसे होती है, यह वैशेषिक मत के अनुसार समझाया गया है। यहां पर प्रलय के समय सारे परमाणुओं का विभाजन कैसे होता है इसे विस्तार से तर्क-

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

तरङ्गिणीमें श्रीगुणचन्द्र समझाते हैं (पृ० ४५५-५६)। यहां पर प्राचीन और नवीन नैयायिकों के मतभेदमें गुणरत्न प्राचीन नैयायिकों के मत को समर्थित करते हुए समवायि कारण के नाश से कार्य का नाश होता है, इस सिद्धान्त को स्वीकार करते हैं। द्रव्य की चर्चा में गुणरत्न आत्मा की चर्चा प्रमेय में हो जाने के कारण पुनरुक्ति दोष के वारण के लिये नहीं करते हैं।

द्रव्य के अनन्तर गुण निरूपण में तर्कभाषाकार गुण का लक्षण "सामान्यवानसमाधिकारणमस्यन्यात्मा गुणः" ऐसा देते हैं। प्रकाशिकाकार गोवर्धन इस लक्षण में 'कर्म-द्रव्यभिन्नत्वे सति' ऐसा विशेषण बढ़ाते हैं। गुणरत्न इस विशेषण वृद्धि को विस्तार से समझाते हैं और रघुनाथ शिरोमणि के गुण के लक्षण को भी उद्धृत करते हैं। गुण की चर्चा में रूप की चर्चा भी की जाती है। गुणरत्न प्राचीन नैयायिकों के मत को पुष्ट करते हुए चित्ररूप को आवश्यकता समझाते हैं (पृ० ४८६)। रूप, रस, गन्ध और स्पर्श इन चारों गुणों के लक्षण को पदकृत्य शैली से समझा कर पाचन प्रक्रिया की विस्तार से चर्चा करते हैं। यहां पिठर-पाकवादी नैयायिक और पीलुपाकवादी वैशेषिक के मतों को वे विस्तार से और विशदता से निष्पक्ष रूप से स्थापित करते हैं। इस प्रक्रिया में विभागज विभाग की सहायता से परमाणु में रूपादि का फर्क कैसे होता है यह बात अपने शिष्य को स्पष्टता के वास्ते वे समझाते हैं (पृ० ४९४)।

चार गुणों के निरूपण में संख्या का निरूपण तर्कभाषाकार करते हैं। गुणरत्नजी ने यहां पर गोवर्धन के लक्षण के साथ असम्मति प्रगट करते हुए कहा है कि "वस्तुतस्तु तदपि लक्षणं न संभवति तस्य लक्षणतावच्छेदकत्वात्"। इतना कह कर वे अपनी ओर से "व्यासज्यवृत्तित्वे सति पृथक्त्वात्म-गुणत्वव्याप्यजातिमत्त्वम्" (पृ० ४९९) ऐसा यथार्थ लक्षण देते हैं। यह बात उनकी सूक्ष्मेक्षिका की बोधक है। इसी तरह वे परिमाण नामक गुण का भी 'कालवृत्तिवृत्तित्वे सति एतेवृत्तिमात्रवृत्तिगुणेचसाक्षाद्व्याप्यजातिकत्वं परिमाणत्वम्' (पृ० ५०४) स्पष्ट लक्षण देते हैं। 'पृथक्त्व' गुण को समझाते हुए वे अन्योन्याभाव से पृथक्त्व किस तरह भिन्न है इसका स्पष्टीकरण विशदतासे करते हैं।

तदनन्तर वे संयोग को समझाते हुए इसका भी समुचित लक्षण "विभागप्रतियोगिकान्योन्याभावत्वे सति एकवृत्तिमात्रवृत्तिगुणत्वसाक्षाद्व्याप्यजातिकत्वं संयोगत्वम्" देते हैं। इस लक्षण को पदकृत्य शैली से समझा कर संयोग के भेद को भी वे समझाते हैं। इस विषय में नैयायिक जो कि संयोग को अव्याप्य वृत्ति कहते हैं उनके साथ अपनी असम्मति प्रकट करते हुए श्रीगुणरत्न संयोग को भी व्याप्य वृत्ति सिद्ध करते हैं। अपने मत के समर्थन में वे लीलावती को उद्धृत करते हैं (पृ० ५१३-१६)। संयोग के अनंतर स्वाभाविक क्रम से विभाग का निरूपण आता है। विभाग यह संयोग का अभाव नहीं है, किन्तु स्वतंत्र गुण है—यह बात एक अच्छे तार्किक की तरह गुणरत्न समझाते हैं।

तदनन्तर परत्व, अपरत्व इत्यादि गुणों को संक्षेप में समझा कर वे शब्द निरूपण की चर्चा विस्तार से करते हैं। 'वीचीतरङ्गन्याय' किंवा 'कदम्बमुकुलन्याय' से नये-नये शब्द किस तरह उत्पन्न होते हैं और श्रोत्रेन्द्रिय में ही उत्पन्न होकर शब्द का किस प्रकार ग्रहण होता है इसे वे विस्तार से समझाते हैं। शब्द का अनित्यत्व और केवल तीन क्षण तक शब्द कैसे रहता है यह समझाते हुए बुद्धि केवल दो क्षण तक ही रहती है ऐसा स्पष्ट करते हैं। शब्द के नाश के विषय में पूर्व पक्ष के मत को तर्कभाषाकार का मत समझने में भूल गुणरत्नजी ने यहाँ पर की है। यह कुछ केशव मिश्र की बात को समझने में गलती से हो गया है। शब्द के अनन्तर बुद्धि, धर्म, अधर्म आदि आत्मा के गुणों का निरूपण करते हुए भ्रम किंवा अन्यथाख्याति का भी निरूपण वे करते हैं। इस निरूपण में ख्यातवाद और भिन्न-भिन्न ख्यातियों की चर्चा की गई है (पृ० ५३०)।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org

द्रव्य और गुण की चर्चा के अनन्तर कर्म निरूपण में गुणरत्न कर्म का स्वतंत्र लक्षण ही देते हैं। यह है "संयोग-विभागयोरनपेक्षकारणं कर्म" (पृ० ५३२)। यहां वे प्रशस्त-पाद भाष्य का अनुसरण करते हैं। उन्हें तर्कभाषाकार का और गोवर्धन का दिया हुआ लक्षण संतोष नहीं दे सका है। सामान्य, विशेष समवाय और अभाव ये चारों पदार्थ वैशेषिक के ही अपने पदार्थ हैं। फिर भी यहाँ गुणरत्न इन पदार्थों का खण्डन नहीं करते हैं सामान्य में सामान्य या जाति उपाधि से किस तरह भिन्न है, यह समझाते हैं। उनके मतानुसार जाति संकर से मुक्त होनी चाहिए (पृ० ५३४)। "ब्राह्मणत्व" जाति किस तरह चारों प्रकार से शक्य होती है यह तार्किक युक्ति से वे प्रस्तुत करते हैं। विशेष की खास चर्चा न करते हुए समवाय की चर्चा में स्वरूप सम्बन्ध से समवाय किस तरह भिन्न है और अवयवी केवल अवयवों का समूह न होकर अवयवों से भिन्न है यह न्याय वैशेषिक का सिद्धान्त वे अच्छी तरह प्रतिपादित करते हैं (पृ०५३७)।

समवाय के बाद अभाव की चर्चा वे विशेष रूप से करते हैं। अन्योन्याभाव से संसर्गाभाव, जिसके तीन प्रकार हैं, वह कैसे पृथक् हैं इसे विशदता से और विस्तार से वे समझते है। इस चर्चा में प्रत्येक अभाव एक दूसरे से क्यों भिन्न हैं यह भी वे अच्छी तरह समझाते हैं (पृ०-५४१-५२)। मीमांसक जो कि अभाव को अलग नहीं मानते हैं उनका खण्डन भी वे न्याय वैशेषिक के सिद्धान्तों के अनुसार करते हैं।

आत्मा, शरीर, इन्द्रिय और अर्थ के निरूपण के अनन्तर न्याय के अवशिष्ट आठ प्रमेदों में वे अत्यन्त संक्षेप करते हैं। सिद्धान्त की चर्चा में गुणरत्न गोवर्धन का अनुसरण करते हैं और गोवर्धन ने वार्त्तिककार के मतानुसार तर्क-भाषाकार जो कि भाष्यकार वात्स्यायन के मत का स्वीकार करते हैं उनका खण्डन करते हैं। गुणरत्न भी उसी तरह तर्कभाषाकार के मत का खंडन विशेषतः अभ्युपगम सिद्धान्त के भेद के विषय में करते हैं। सिद्धान्त के बाद तर्क का लक्षण देकर प्रकाशिकाकार के अनुसार तर्क के प्रकार समझाते हैं (पृ० ५८३-८४)।

न्याय शास्त्र के अन्य पदार्थों को विशेष चर्चा न करते हुए वे वादजल्प और वितण्डा ये तीन पदार्थों को समझाते हैं। यद्यपि हेमचन्द्रसूरि ने केवलवाद को ही स्वीकार जैन दर्शन को दृष्टि से प्रमाणमीमांसा में किया है फिर भी यहां प्रामाणिक टीकाकार गुणरत्न तीनों को अच्छी तरह समझा कर तीनों के भेद की आवश्यकता भी समझाते हैं। कथा को चर्चा के इस प्रसंग में निग्रहस्थान की चर्चा भी समाविष्ट होती है। कथा में केवलवादी और प्रतिवादी ही भाग लेते हैं इस मत का खण्डन करते हुए गोवर्धन वादी और प्रतिवादी के समूह अर्थात् एक से अधिक व्यक्ति भी इसमें भाग ले सकते हैं, गुणरत्न उन्हीं का अनुसरण करते हैं। इस विषय में रत्नकोशकार ने कथा के जो अन्तर प्रकट किया है उसका खण्डन भी गुणरत्न करते हैं। निग्रह स्थान की चर्चा में हेत्वाभास की चर्चा एक बार आचुकी है वे इस वास्ते पुनरावृत्ति नहीं करते हैं। छल और गति के विषय में भी वे अधिक कुछ विवरण नहीं करते हैं क्योंकि कथा की चर्चा में ये सब आ जाते हैं।

संक्षेप में तर्कभाषाकार और उनके टीकाकार प्रकाशिकाकार गोवर्धन ने जिन विषयों की विशेष चर्चा नहीं की है, ऐसे विषयों की चर्चा गुणरत्न ने अपनी तर्कतरङ्गिणी में आधुनिक प्रामाणिक टीकाकार की तरह की है। ये विषय हैं (१) मङ्गलवाद, (२) काशीमरण मुक्ति, (३) उद्देश्य, लक्षण और परीक्षा का विस्तार से विवरण, (४) कारण लक्षण (५) षोढा सन्निकर्ष (६) व्याप्ति (७) अवच्छेदकत्व (८) सामान्यलक्षणा तथा ज्ञानलक्षणा प्रत्यासत्ति (९) हेतुकेतीन प्रकार (१०) सत्प्रतिपक्ष और संदेह का भेद (११) शब्द की अनित्यता (१२) शब्द शक्तियाँ (१३) प्रामाण्यवाद में मीमांसकों के तीनों मत की आलोचना (१४) शरीरत्व जाति (१५) प्रलय (१६) गुण का लक्षण (१७) चित्ररूप (१८) पाकज प्रक्रिया (१९) पृथक्त्व और अन्योन्याभाव का भेद (२०) अन्यथाख्याति और अभाव के प्रकारों के भेद इत्यादि हैं।

न्याय की अन्य कृतियों में शशधर टिप्पण वगैरह भी उन्होंने लिखा है। काव्यप्रकाश की भी विस्तृत टीका उनकी कृति है इस तरह खरतरगच्छ के यह विद्वान अपने समय के पदवाक्यप्रमाणज्ञ ऐसे एक गच्छ के गौरव प्रदान करने वाले विद्वान थे। आशा है खरतर गच्छ के श्रेष्ठी उनकी कृतियों को प्रकाश में लाने का सविशेष प्रयत्न करेंगे।

Jain Education International For Private & Personal Use Only www.jainelibrary.org